शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2024
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

देवेश ठाकुर के उपन्यासों में सांप्रदायिकता के स्वर

देवराम (शोधार्थी)
हिंदी विभाग
सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय
अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड), भारत

शोध संक्षेप

देवेश ठाकुर कुमाऊँ अंचल के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न रचनाकार हैं। इनकी साहित्य साधना का दायरा विस्तृत है। इनके उपन्यासों में पर्वतीय अंचल के किलमोड़, हिंसालु के झाड़ियों, बांज-चीड़ के जंगलों से लेकर मुम्बई के फुटपाथों, गलियों और महाविस्तृत समुद्र तक का जीवंत वर्णन मिलता है। इनके उपन्यासों में समकालीन भारतीय समाज के राजनीतिक, धार्मिक एवं सामाजिक जीवन का चित्रण तो हुआ ही है, साथ ही समाज में स्थापित विभिन्न धर्म, जाति, वर्ग, संप्रदाय का वर्णन भी हुआ है। उपन्यास में धर्म, जाति की कट्टरता के साथ सांप्रदायिकता को भी विभिन्न स्वरूपों में प्रदर्शित किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में देवेश ठाकुर के उपन्यासों में सांप्रदायिकता के स्वरों का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द : *संप्रदाय, सांप्रदायिकता, बाजारवाद, इंसानियत, वैमनस्य, भौतिकवाद, कट्टरता, दिखावापन, कानून*

संविधान में भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र का दर्जा प्राप्त है। यहां पर सभी धर्म व संप्रदाय के लोग अपनी-अपनी धार्मिक मान्यताओं का पालन करते हैं। देवेश ठाकुर के उपन्यासों में भी भारत में प्रचलित सभी धर्मों का उल्लेख हुआ है। देवेश ठाकुर कृत 'भ्रम भंग' उपन्यास में 'भारत लॉज' का चित्रण है, जहां सभी संप्रदाय के लोगों को एक साथ चित्रित कर उपन्यासकार ने विश्व कल्याण की भावनाओं को प्रदर्शित किया है। जिसमें युसुफ साहब पंजाबी और उर्दू में एम.ए. हैं तथा फिल्मी रिसाला निकालते हैं। सरदार बूटा सिंह एक ऑफिस में काम करते हैं। मिस्टर भट्टाचार्य सुबह-शाम पूजा-पाठ में व्यस्त रहते हैं तथा मैथ्यू कामगार के रूप में भारत लॉज में रहता है। उपन्यासकार ने सभी धर्म के लोगों को एक साथ एकत्र कर सामाजिक एकता एवं विश्व बंधुत्व की भावनाओं को प्रदर्शित किया है। भारत विविध धर्मों का देश है। जिसमें हिंसा और घृणा से मुक्त विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच शांति एवं सद्भावना हमेशा बनी रहती है। उपन्यास 'प्रिय शबनम' में मुख्य पात्र मंगल की मां हिंदू धार्मिक महिला है। उसके पति मिस्टर मार्टिन कोटद्वार में अंग्रेजी के अध्यापक हैं। मंगल को मैट्रिक से आगे की पढ़ाई के लिए अपनी बहन मिसेज क्लेयर के पास इलाहाबाद भेज देते हैं। मंगल निम्नवर्गीय परिवार से है। पढाई पूरी होने के बाद उसकी नियुक्ति कैथौलिक्स सेंट कॉलेज में हो जाती है। 'काँचघर' उपन्यास में रेखा की मदद से उपन्यासकार ने देश प्रेम की भावना को उजागर किया है। रेखा स्वछंद प्रवृत्ति की महिला है। वह पोस्ट ग्रेजुएशन के दिनों प्रोफेसर हडसन के बहुत नजदीक आती है, परंतु वह उसी यूनिवर्सिटी में रिसर्च कर रहे पाकिस्तानी मिर्जा से विवाह कर लेती है और बच्चे होने के बाद

नाम को लेकर समझौता करती है। "बिंदु बात यह है कि पाकिस्तानी चाहे कितना भी पढ़ ले रिलीजन के मामले में बड़ा दकियानूसी होता है। शादी से पहले हमारी अन्डर स्टैडिंग थी कि लड़का होगा तो उसका नाम मुस्लिम जैसा रखेंगे और लड़की हुई तो उसका नाम हिंदू होगा। अब जब यह बबली हुई तो कहने लगा मुस्लिम नाम देंगे। मैंने मना कर दिया।"1 इसी उपन्यास में सुहास निम्न मध्यवर्गीय परिवार से संबंधित है। वह सुमी से प्रेम करता है तथा अपने परिवेश व संप्रदाय के डर से सुमी को अपना नहीं पाता। सुमी उच्च मध्यवर्गीय परिवार की लड़की है। जिसके विचारों में स्वछंदता और संप्रदाय से टकराहट के स्वर दिखाई देते हैं। "तुम्हारा डर मैं जानती हूँ सुहास। यह दअसल तुम्हारा डर नहीं काम्प्लेक्स है। अपने हालत का अपने माहौल का और अपने संस्कारों का तुममें जैनी माँ-बाप के जो जीन्स है न, उनका तुम वेजीटेरियन हो, अपने व्यवहार में भी और अपनी सोच में भी। तुमको मैं तैयार करूंगी।"2 उपन्यास में सुमी एक प्रगतिशील नारी चरित्र के रूप में सामने आती है, जो अपने वर्ग के बंधन और अपनी सुविधा के द्वारा बनाए गए पंडों, मुल्लाओं, फादरों के नियमों का खण्डन करते हुए चित्रित की गयी है। "तुम पागल हो। एक बात कहूँ। बंधन की बात किस वर्ग ने कही है। उस वर्ग ने जिसने अपने लिए अभी कोई बंधन नहीं माना। पंडों, पुजारियों, मुल्लाओं और फादरों की निजी जिंदगी देखो... घृणा हो जाएगी तुम्हें। उपदेश देने वाले साले खुद कभी इसका पालन नहीं करते। लोगों को धोखा देते हैं और खुद जश्न मनाते हैं।"3

'व्यक्तिगत' उपन्यास में प्रमुख पात्र मन्नू के प्रति उसी के साथ पढ़ने वाला सौहार्द सहृदता व जरूरत पड़ने पर मन्नू का मददगार बनता है। जिस कारण मन्नू के हृदय में भी उसके प्रति और उसके घर वालों के प्रति सम्मान व सद्भावना का बीज पनपता है। वह कहता भी है '"हमीद भी तो है जरूरत पड़ने पर उससे भी तो कह सकता हूँ। उसके घर वाले भी तो मुझे कितना मानते हैं।"4 मन्नू पिता के पत्र के माध्यम से नजीबावाद में हिंदू व मुस्लिम संप्रदाय के बीच सांप्रदायिक दंगों का उल्लेख करता है। जिसे वह आज के युग की मानसिक विकृत का द्योतक मानते हैं। "आपने अपने पिछले पत्र में लिखा था कि शहर में साप्रदायिक दंगे हो रहे हैं कि हिंदुओं ने जगह-जगह मुसलमानों के घर जला डाले हैं। पढ़कर बहुत बुरा लगा था॥ सभी शहरों में अलग-अलग जाति समुदाय और धर्मों के लोग रहते हैं। आपस में भाईचारा भी चलता है। मैं सोचता हूँ आज के युग में सांप्रदायिकता विकृत मानसिकता की द्योतक है।"5

'अपना-अपना आकाश' उपन्यास में मुख्य पात्र प्रिया सूद की माँ मिसेज दिव्या सूद एक उच्चवर्गीय समाज सेविका है। वह एक क्रिश्चियन लड़के और हिंदू लड़की का विवाह करा देती है तथा प्रो.चंद्रहास को प्रेम सम्प्रदाय व धर्म से बढ़कर होने की सलाह देती है। "बात यह है प्रोफेसर कि लड़का क्रिश्चियन है। उसकी तरफ से घर वाले अकड़े हुए थे कि पहले लड़की को क्रिश्चियन बना लो फिर शादी कर लेंगे। और लड़की क्या करती थी ? .... लड़की-लड़का दोनों कहते हैं कि हम प्यार के बीच रिलीजन को नहीं आने देंगे। दोनों अपना-अपना धर्म मानेंगे।"6 मिसेज दिव्या सूद दोनों का विवाह आर्यसमाज में करवाती है और बाद में सिविल मैरिज करवा देने का आश्वासन भी देती है। बच्चे होने पर उसके धर्म अपनाने पर वह कहती है - "मसलन कुछ ऐसा तो सोच ही सकते हैं कि संतान अगर

लड़की हुई तो वह मां का धर्म अपना लेगी और लड़का हुआ तो वह बाप का धर्म अखित्यार कर लेगा या ऐसा कुछ कि बड़ा होने पर जिसको जो अच्छा लगेए अपना ले। कम-से-कम उनके पास च्वाइस तो होगी।"7 'जनगाथा' उपन्यास में देश विभाजन के साथ संप्रदायिक दंगे व मनुष्यता के विघटन के साथ हिंदू-मुस्लिम संप्रदाय के बीच टकराव का खौफनाक चित्रण किया है। "आक्रमणकारी सब कुछ तहस-नहस करके लौट जाते हैं। दूसरे दिन शकुन का परिवार एक ट्रक में लदकर स्टेशन तक आ जाता है...रिफ्यूजी ट्रेन है। पूरे स्टेशन पर मिलिट्री का पहरा है। पूरे माहौल में एक डर समा गया है। सभी की आंखे सहमी-सहमी-सी हैं। कहीं चीत्कार है, कहीं सुबकियाँ। अल्ला हो अकबर.....हर हर महादेव .... ट्रेन अमृतसर के लिए चल पड़ी है। शकुन डिब्बे के एक कोने में बैठी है ..... पूरा डिब्बा रिफ्यूजियों से अटा पड़ा है। गाड़ी रेंगती हुई चल रही है .... पूरा रास्ता वीभत्स है .... गाड़ी से नीचे फेंक दिए गए बच्चे। औरतों का आर्तनाद करते हुए शरीर। रेल की पटरियाँ खून से सनी पड़ी हैं। गाड़ी के दोनों तरफ जगह-जगह लाशें बिछी हैं।"8 साम्प्रदायिक वैमनस्य के कारण दंगों का खौफनाक मंजर उपन्यासकार ने प्रदर्शित किया है। धर्म की कट्टरता के साथ धार्मिक सद्भावना का परिचय भी उपन्यास में मिलता है। "अनेक मुस्लिम उनके दोस्त हैं। वे सहायता करते हैं। सभी हिंदू लड़कियों को अपने यहां छिपा लेते हैं।"9 उपन्यास में शकुन के परिवार को सांप्रदायिक दंगों का सामना कर पाकिस्तान से भारत जाने पर मजबूर किया जाता है। उपन्यास में शमीम के परिवार को मुरादाबाद दगों का सामना करना पड़ता है और वतन न छोड़कर मुरादाबाद से अलग जगह कम्यून में अपने घर, प्रियजनों से अलग होकर रहना पड़ता है। "ये लोग पाकिस्तान नहीं गए। मुरादाबाद में दंगे हुए तो यहां आ गए। यहां ये पूरी तरह सुरक्षित हैं। भाईजान पार्टी में है। उन्होंने ही यह तय किया कि हिंदोस्तान नहीं छोड़ेंगे। हम यहीं की मिट्टी में पले-बढ़े हैं। हमारा वतन है। अब यहां जो कुछ भी हो।"10 देश की सबसे बड़ी दुश्मन सांप्रदायिकता एक ऐसा जहर है जो व्यक्ति के अपने धर्म जाति और भाषा आदि की अच्छाईयों को गिनाता है जो दूसरों के धर्म की बुराईयों के साथ लाखों कमियाँ भी गिनाता है। उपन्यासकार ने शमीम के माध्यम से सांप्रदायिक जहर से उठकर लोक कल्याण की बात कहलाई है। "अगर हम लोग भी जाति, धर्म, वर्ग और संप्रदाय में विश्वास करने लगे तो आ गया कम्यूनिज्म हिंदुस्तान में। जो काम बंटवारे के नाम पर इतना खून खराबा कर सकता है उसे अपने को, अपनी सोच को बदलना ही चाहिए। नहीं तो यह हमेशा होता रहेगा और इंसान इसी तरह बंटा पड़ा रहेगा। यह सिस्टम ही हमें खत्म कर देगा।"11 उपन्यासकार ने पत्रकार जोशी के माध्यम से सांप्रदायिकता व आतंकवाद को देश की एकता व अखण्डता की चुनौती बताते हुए निष्क्रिय राजनेताओं पर कटाक्ष किया है। "मैं देखता हूँ पंजाब में हाहाकार मचा हुआ है। इन्दिरा गांधी एयर कण्डीशण्ड कमरे में बैठी मुस्कुरा रही है। रोज बम फट रहे हैं। रोज हत्याएं हो रही हैं। स्वर्ण मंदिर देश के दुश्मनों का अड्डा बन गया है। सरकार की हिम्मत नहीं हो पा रही, उन्हें वहां से खींचकर चौराहे पर खड़ा कर दे और उनके सीने पर बन्दूक की नाल रख दे। इसके लिए हिम्मत चाहिए, ईमानदारी चाहिए, समाज और देश के प्रति अपने कर्ज का अहसास चाहिए।"12 पत्रकार जोशी बम्बई व भिवंडी के साम्प्रदायिक

दंगों के बारे में बताते हैं। पूंजीपति, राजनेता, बिल्डर और इनका साथ देने वाले पुलिस प्रशासन पर कटाक्ष करते हुए कहते हैं, "बम्बई में जमीन हीरे से भी ज्यादा कीमती हो गई है। ये बिल्डर दारू का धंधा करने वाले और काला बाजारिए सभी इन जमीनों को हथियाना चाहते हैं। इसीलिए इन्होंने पुलिस से मिलकर दंगे करवाए और इनको सांप्रदायिक रंग दे दिया। तुम सोचते हो इन दंगों में क्या हिंदुओं ने हिंदुओं को मुसलमानों ने मुसलमानों को नहीं मारा ? मारा है और खूब मारा है। दरअसल बात यह है कि शिब्बू, संपद्रायवाद की इस पूरी प्रक्रिया को समझने के लिए इतिहास के पन्नों से गुजरना होगा। यह देश अंग्रेजों के आने से पहले कभी संप्रदायवादी नहीं रहा। धार्मिक होना सम्प्रदायवादी होना नहीं होता।"13 अपने राजतंत्र को चलाने के लिए संप्रदाय को उत्प्रेरक के रूप में प्रयोग कर रहे राजनेता तथा उनके साथ देते पूंजीपति व्यवसायिक वर्ग अपनी सुरक्षा को केवल अपने संप्रदाय के व्यक्ति के साथ ही महसूस कर रहे हैं। पत्रकार जोशी ने उपन्यास में साम्प्रदायिकता के अनेक मुद्दे उठाये हैं। "मैडम को या यहां के दंगों के इतिहास से अलग नहीं देखा जा सकता। वह भी वही सब कर रही है जो अंग्रेजों ने किया। जनता को हिन्दू-मुसलमानों में सवर्णों और हरिजनों में बांट दो और खुद शोषण करते रहो। अब बतलाओ, एक हिंदू रिक्शेवाला अपने को एक मुसलमान रिक्शेवाले के ज्यादा नजदीक महसूस करता है या हिंदू उद्योगपति के ? उसकी समस्याएं, उसके सुख-दुःख मुस्लिम रिक्शेवाले के सुख-दुःखों से ज्यादा मिलते हैं या हिंदू उद्योगपति के सुखदुःखों और उसकी समस्याओं से। लेकिन स्वार्थी तत्व इन पूरे तथ्यों को उलटकर उसे साम्प्रदायिक रंग दे देते हैं, ताकि आम आदमी ए जुट न होने पाए....।"14 आधुनिक भारत में सांप्रदायिकता के विस्तार के लिए खास तौर पर अंग्रेजी साम्राज्य की 'फूट डालो और राज करो' की नीति जिम्मेदार है। जिसने हिंदू और मुस्लिम संप्रदाय को बांट कर जनता का शोषण किया और अंत में देश के दो टुकड़े कर चले गए। उपन्यास में इसका चित्रण पत्रकार जोशी करते हैं। "तो अंग्रेजों ने यहां आकर हिंदू संप्रदायवाद और मुस्लिम संप्रदायवाद चलाया ताकि देश की जनता बंटी रहे और वे देश पर शासन और उसका दोहन करते रहे। एक राष्ट्र में दो राष्ट्रों का सिद्धांत भी उन्हीं की देन है। जिसके कारण आगे चलकर देश के दो टुकड़े हो गए।"15 आजादी से पूर्व अंग्रेजों ने भारत की मौजूदा शक्तियों को बांटकर छोटा कर दिया और उन्हें एक होने से रोकने के लिए सतत् प्रयत्न किया। साथ ही साथ देश की सम्पदा संस्कृति की छवि का निरंतर दोहन और अपने को धर्म निरपेक्ष दिखलाने की कोशिश करते रहे। इन सब का उल्लेख पत्रकार जोशी बड़े कटु शब्दों में करते हैं। "मुगल बाहर से आए जरूर, लेकिन यहां आ कर उन्होंने इसी को अपना देश मान लिया, इसलिए मुलसमानों को विदेशी कहना इतिहास को झुठलाना है। विदेशी केवल अंग्रेज थे जिन्होंने हमारा, हमारी सम्पदा का हमारी संस्कृति का और हमारी छवि का निरंतर दोहन किया है। उन्होंने ही हमारे इतिहास को हिंदू काल मुस्लिम काल और ब्रिटिश काल में बांट कर हमें साम्प्रदायिक और अपने आपको धर्म-निरपेक्ष दिखलाने की कोशिश की। अपने शासन को इस सालों ने ईसाई काल क्यों नहीं कहा ....। इसीलिए कि इनकी धर्म निरपेक्षता की छवि बनी रहे।"16 उपन्यास 'शून्य से शिखर तक' में

अकेलेपन को मन का कोढ के रूप में बताया गया है। साम्प्रदायिकता मध्य युग के कोढ के रूप में है। उपन्यास में सदानंद के द्वारा उपन्यासकार कहना चाहता है कि "अकेलेपन मन का कोढ है। जैसे राष्ट्रीयता आज के युग का कोढ बन गयी है। जैसे साम्प्रदायिकता मध्य युग की कोढ़ थी .... यह अकेलापन अपने क्षणों में अपने से बाहर देख ही नहीं पाता।"17 उपन्यास में उपन्यासकार ने सांप्रदायिक वैमनस्य की समस्या से परे हिंदू लड़की शालिनी एवं ईसाई युवक एन्ड्रूस के प्रेम को दिखाया है, परंतु विवाह के लिए धर्म परिवर्तन जैसी समस्या को प्रदर्शित कर शालिनी से कहलवाया है "अब कहता है कि उसके माँ बाप चाहते हैं कि पहले लड़की को क्रिशिचयन बना लो, फिर शादी होगी। तू बता यह कहाँ का प्यार है। प्यार में यह साला धर्म और संप्रदाय कहां से आ गया।"18 शालिनी प्यार में कोई शर्त नहीं चाहती। वह केवल इंसानियत के धर्म को सर्वोच्च मानती है और क्रिश्चियन धर्म अपनाने से मना कर देती है। "अभी तो कुछ नहीं। लेकिन इतना जरूर है कि प्यार में कोई शर्त मानूँगी नहीं। मैंने इन्सान से प्यार किया है, किसी क्रिश्चियन से नहीं। क्रिश्चियन बनने के लिए नहीं। मैं तो उस इंसान से प्यार करती रही जो इंसान था। और अगर वह चाहे कि मैं ईसाई और ईसाइयत से भी प्यार करूं तो यह तो मुझसे होने से रहा।"19 भारत धर्म निरपेक्ष देश के रूप में जाना जाता है। जहां सभी धर्म के लोग निवास करते हैं तथा सभी की अपनी-अपनी संस्कृति है। उपन्यास 'शिखर पुरुष' में डां. शंभू कुमार मिश्र सभी संप्रदायों की संस्कृतियों का उल्लेख करते हैं। "इस देश में भारतीय संस्कृति जैसी कोई चीज है क्या ? जिसे आप भारतीय संस्कृति कहते हैं। वह कट्टरपंथी हिंदू संस्कृति है और आपको अच्छी तरह मालूम है कि इस देश में सिर्फ हिंदू ही नहीं रहते मुसलमान भी रहते हैं, सिख, ईसाई और पारसी भी रहते हैं। उनकी भी अपनी संस्कृति है, जो हिंदू संस्कृति से भिन्न है और भारतीय संस्कृति की बात कहते-कहते कभी इन लोगों की संस्कृति आपके दिमाग में नहीं आती।"20

हर संप्रदाय में अपने नियम-कानून, बंधन, आरती, पूजा पद्धति, स्मरण, ईश्वर की अवधारणा आदि होते हैं, पर धर्म के ठेकेदार (पुजारी, मंहत, मुल्ला, पादरियों) ने अपने हिसाब से इसे बढ़ावा दिया है तथा इस पाखण्ड से व्यक्ति की गरिमा का खण्डन भी किया है। इन सब का चित्रण उपन्यासकार ने डॉ. अरोड़ा के माध्यम से किया है। "हे ईश्वर! मेरी इस आकांक्षा को पूरा कर मैंने इसी के लिए तो तेरा निर्माण किया है। अपनी कल्पना के इस सर्वशक्तिमान तत्व को उसके मंदिरों मस्जिदों, गिरजाघरों आदि में प्रतिष्ठित किया उसको भेंट देने का नाटक रचना उसकी आरती, उसका स्मरण, उसकी पूजा करने की परंपरा चलाई। यह स्थापित किया गया कि सब उसी प्रभु की इच्छा से होता है। व्यक्ति की इच्छा का कोई अर्थ नहीं है। वह तो मिट्टी का पुतला है और मिट्टी में मिल जाता है। ईश्वर की इस प्रकार की प्रतिष्ठा का पुजारियों मंहतों, सांधुओं, मुल्लाओं और पादरियों ने खूब फायदा उठाया और उठा रहे हैं। इससे व्यक्ति की गरिमा खण्डित होती है। आज विश्व में भौतिकवाद के बढ़ते प्रकोप और बाजारवाद के फैलाव के फलस्वरूप मानव संवेदना भी संकटग्रस्त होती जा रही है। बाजारवाद की बढ़ती प्रतिबद्धता तथा बाजारों पर सम्प्रदाय की पकड़ से आंख मूंदकर समाज निर्द्वंद होकर चल रहा है।"21 प्लेटफार्म पर चाय वाले खोमचे वाले, फल वाले आवाज

लगाते है बीच-बीच में 'हिन्द पानी और मुस्लिम पानी' की आवाजें भी सुनाई पड़ती। विभाजन के समय एक मुस्लिम बहुल क्षेत्र की मांग करना राजनीति की भावना से प्रेरित तो थी लेकिन सांप्रदायिक कारण भी इसमें मुख्य उत्तरदायी थे। उपन्यास 'कातरवेला' में प्रो.सोनल मेहता भी इसी चिंता से ग्रस्त होकर नेताओं के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हैं। "देश की चिंता किसे है। होती तो आजादी मिलते ही गांधी को यों हाशिए पर नहीं डाल दिया जाता। गांधी जी ने तो कहा था कि देश का विभाजन टालने के लिए जिन्ना को प्रधानमंत्री बना दो। न नेहरू न पटेल ने। वे तो अपने संघर्षों का फल चखने को आतुर थे।"22

उपन्यास में अमर चौधरी जहां ईश्वर की कल्पना को इन्सान की स्वार्थ पूर्ति मानते हुए मुसीबत में ही भगवान को याद करना मानता है। जबकि सोनल मेहता मंदिर मस्जिद, चर्च मुसीबत से बचने के लिए उपस्थिति दर्ज करना मानती है। "लेकिन हम लोग मंदिरों में जाते हैं। मस्जिदों में नमाज पढ़ते हैं, चर्च में जाते हैं .... वह सब क्या है क्या वे सब लोग हमेशा मुसीबतों से बचने की प्रार्थना करके वहाँ अपनी उपस्थिति दर्ज कराते रहते हैं। विभाजन के बाद के महीनों तक दोनों देशों के बीच विशाल जन स्थानांतरण हुआ। पाकिस्तान में बहुत से हिंदूओं और सिखों को बलात बेघर कर दिया गया।"23 इसी का स्वरूप उपन्यास 'जीवा' में शेर सिंह लाहौरी के द्वारा बताया गया है। "हम भी अपना घर पाकिस्तान में छोड़कर आ गए। आँखों के सामने पूरा कुनबा नेस्तोनाबूत हो गया। औरत आंखों के सामने काट डाल गयी। जवान लड़की को दंगाई उठा कर ले गए। बस, हम बच गए लुटते-पिटते अमृतसर आ गए। फिर दिल्ली फिर बंबई। यहां आकर जीने का मजा ही किरकिरा हो गया ....।"24

उपन्यास में जहाँ अल्ला रखा भिखारी अल्लाह के नाम के साथ-साथ रामायण की चौपाई गाता हुआ भीख मांगता फिरता है। वहीं उपन्यास में मरियम बूढ़े बाबा की शरण में जाती है और कुछ समझ न आने पर भी कुरान शरीफ की आयतें सुनती है।

'देवता के गुनाह' उपन्यास में उमाकांत आशिक यास्मीन से प्रेम करते हैं। यास्मीन का विवाह कहीं और तय हो जाता है। "यास्मीन उदास थी पूछने पर उसने बतलाया कि कल उसकी मंगनी हो गयी और अगले जुम्मे को शादी हो जाएगी। सुनकर 'आशिक' दुखी हो गया फिर अपने को संभालते हुए वे बोले "यास्मीन इस थोड़े से दिनों में तुमने मुझे जितना दिया है, यही मेरे लिए बहुत है। मैं खुदा से दुआ करता रहूँगा कि वह तुम्हें महफूज और खुश रखे।" उपन्यास में 'आशिक' जी की पत्नी कमला मनजीत को शोभन से शादी के लिए समझाती है कि जात-पात कुछ नहीं होता ये सब पंडितों और मौलवियों का बनाया ढकोसला है। वह संप्रदाय व जाति से ऊपर उठकर विश्वकल्याण व लोक कल्याण की बात कहती है।"25 इसीलिए कि वह विजातीय है? जमाना बदल रहा है। मनजीत। तुम किस दुनिया में रहती हो। फिर समझाने के ढंग से वे बोले .... "जात-पात कुछ नहीं होती। दुनिया में दो ही जातियाँ होती है। एक पुरुष जाति और दूसरी स्त्री जाति। बाकी सब पंडितों और मौलवियों का बनाया ढकोसला है। अपने स्वार्थ के लिए।"26

'मारिया' उपन्यास में सिंधु मुस्लिम लड़के शौकत से प्रेम करती है। पिता के कट्टर होने व प्रेम प्रंसग का पता चलने पर वह शौकत के वहां बम्बई के लिए घर से भाग जाती है और मारिया के द्वारा शौकत के धर्म के बारे में पूछने पर वह

अपनी जिज्ञासा व्यक्त करती है। "इस दुनिया के सभी बाशिंदे एक हैं कुछ सिर फिरे और खुद गर्ज लोगों ने इसे अलग-अलग देशों, अलग-अलग धर्मों और जातियों में बांट कर अपना उल्लू सीधा किया है और यहां तक आते-आते पूरी दुनिया अलग-अलग टुकड़ों अलग-अलग खेमों और धर्मों में बंट गयी है। अलग-अलग धर्मों और जातियों की सोच ने इंसानी दुनिया को बहुत नुकसान पंहुचाया है....।"27

'स्वप्न दश' उपन्यास में फिल्मी दुनिया के दिखावेपन को दर्शाया गया है। इंडस्ट्री के प्रति उपन्यासकार ने शैली के माध्यम से विश्वकल्याण की भावना व्यक्त की है। "हाँ एक बात अच्छी है। इस इंडस्ट्री में यहां जात-पात और धर्म का भेदभाव नहीं है। राजनीति में जैसे जात-पांत को लेकर धर्म-कर्म को लेकर हमेशा खींचातान चलती रहती है, वैसा यहां कुछ नहीं है। मराठी और बिहारी पंजाबी और तमिल दिल्ली वाली और केरलवाला और तो सिंधी और पारसी सबकी जोड़ियाँ बन जाती हैं। यहाँ मजा आ जाता है। यार, यह सब देखकर। तब लगता है कि पूरा हिंदोस्तान एक है। कहीं कोई डिविजन नहीं है यार।"28

निष्कर्ष

देवेश ठाकुर के उपन्यासों में सांप्रदायिक स्वर के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इनके उपन्यासों का स्वर विस्तृत और व्यापक जीवन संदर्भों का वाहक है। इनके उपन्यासों में हिंदू संप्रदाय के साथ ही मुस्लिम, ईसाई आदि संप्रदाय का चित्रण हुआ है। साथ ही विश्वकल्याण की भावनाओं को भी प्रदर्शित किया है। इनके उपन्यासों में विश्वकल्याण के लिए साम्प्रदायिक एकता का स्वर भी दिखाई दिया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 पांडेय, डॉ. सतीश, सं. देवेश ठाकुर रचनावली (भाग 1), नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ. 260
2 वही, पृ. 284
3 वही, पृ. 300
4 वही, पृ. 395
5 वही, पृ. 410
6 पांडेय, डॉ. सतीश, सं. देवेश ठाकुर रचनावली (भाग 2), नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ. 212
7 वही, पृष्ठ 143
8 वही, पृष्ठ 236
9 वही, पृष्ठ 236
10 वही, पृष्ठ 242
11 वही, पृष्ठ 243
12 वही, पृष्ठ 288
13 वही, पृष्ठ 425
14 वही, पृष्ठ 426
15 वही, पृष्ठ 426
16 वही, पृष्ठ 426
17 पांडेय, डॉ. सतीश, सं. देवेश ठाकुर रचनावली (भाग 3), नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृष्ठ 167
18 वही, पृष्ठ 327
19 वही, पृष्ठ 327
20 वही, पृष्ठ 483
21 वही, पृष्ठ 490
22 पांडेय, डॉ. सतीश, सं. देवेश ठाकुर रचनावली (भाग 4), नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृष्ठ 146
23 वही, पृष्ठ 148
24 वही, पृष्ठ 184
25 वही, पृष्ठ 283
26 पांडेय, डॉ. सतीश, सं. देवेश ठाकुर रचनावली (भाग 5), नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृष्ठ 34
27 वही, पृष्ठ 58-59
28 वही, पृष्ठ 495